

सार्वजनिक अर्थशास्त्र (Public Economics)

खण्ड-1: लोक अर्थशास्त्र एवं लोक चयन (Public Economics and Public Choice)

विभिन्न राजकोषीय प्रणालियों में राज्य की आर्थिक क्रियाओं का विश्लेषण
लोक अर्थशास्त्र के उद्देश्य व अंग
सामाजिक वस्तुओं का सिद्धान्त
बाह्याताएं एवं मिश्रित वस्तुएं
लोक चयन

खण्ड-2 : सार्वजनिक एवं निजी वस्तुएँ (Public and private goods)

सार्वजनिक वस्तुएँ बनाम निजी वस्तुएँ
सार्वजनिक वस्तुओं एवं सेवाओं का निजी प्रावधानों द्वारा उपलब्ध करना
सार्वजनिक वस्तुओं का नाश कुर्नो समाधान, लिंडाल और सैम्युलसन का सिद्धान्त
क्लब वस्तुएँ

खण्ड-3 : सार्वजनिक व्यय (Public Expenditure)

सार्वजनिक व्यय
पीकाक-वाइसमैन परिकल्पना
लेवाथन हाईपोथीसिस एवं निक्सनेन मॉडल, समता और दक्षता में विनिमय
भारत में सार्वजनिक व्यय का उदभव, वृद्धि, प्रवृत्तियाँ एवं मूल्यांकन
सार्वजनिक व्यय मूल्यांकन एवं बजटीय रूप
सार्वजनिक व्यय मूल्यांकन एवं बजटीय रूप

खण्ड-4 : करारोपण एवं सार्वजनिक वित्त (Taxation and public finance)

करारोपण में न्याय
आवंटन कुशलता
करापात एवं कर विवर्तन
राजकोषीय आपात
भारतीय सार्वजनिक वित्त- I
भारतीय सार्वजनिक वित्त- II

खण्ड-5 : सार्वजनिक ऋण एवं घाटा (Public debt and deficit)

सार्वजनिक ऋण का अर्थशास्त्र
सार्वजनिक ऋण संस्थापित सिद्धान्त, क्रियात्मक एवं क्षतिपूरक वित्त
आन्तरिक व बाह्य सार्वजनिक ऋणों के मुद्दे
विकास के लिए राजकोषीय नीति : साधन गतिशीलता-विकास, वितरण तथा मूल्यों पर प्रभाव
भारत में बजटीय घाटे की नीति